“वर्तमान परिप्रेक्ष्य के सन्दर्भ में संगीत रत्नाकर में वर्णित तंत्री वाद्यों का अध्ययन”

“Vartmaan Pariprekshya Ke Sandarbh Me Sangit Ratnakar Me Varnit Tantri Vadhyo Ka Adhyayan”

(SYNOPSIS)

(विषय–संक्षेप)

फ़ेकल्टी ऑफ परफार्मिंग आर्टस्

द महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा

पी.एच.डी.(संगीत–वयलिन/सितार) की उपाधी हेतु प्रस्तुत

शोध सार

शोधार्थी

आकांक्षा बाजपेयी

शोध निर्देशक (Guide)

प्रो० राकेश जे० महीसुरी

DEPARTMENT OF INSTRUMENTAL MUSIC (Sitar & Violin)

FACULTY OF PERFROMING ARTS

THE MAHARAJA SAYAJIRAO UNIVERSITY OF BARODA-390001

2019-2022

Registration Date: 20/03/2019

Registration No.: FOPA/87

प्रस्तावना (Preface)

भारत अपनी कला और संस्कृति के लिए सपूर्ण विश्व में अपनी अलग पहचान रखता है। संगीत का उद्भव वेदों से माना गया है, जिसमें संगीत के अहम् वेद के रूप सामवेद की चर्चा की जाती है, और साथ ही विद्वानों ने समय–समय पर अपने ग्रन्थों के माध्यम से संगीत को और अधिक शास्त्रों में बांध उसे निश्चित रूप देने का कार्य किया है। भारतीय संगीत का इतिहास अनादि काल से चला आ रहा है। भारत विविध संस्कृतियों का देश है, और यह अपनी कला संस्कृति व अपने संगीत के लिए सम्पूर्ण विश्व में जाना जाता है। संगीत भारतीय संस्कृति का द्योतक है। भारतीय शास्त्रीय संगीत शास्त्रों व् ग्रन्थों में निबद्ध हो कर ही शास्त्रीय संगीत बना। जिसमें संगीत के निश्चित नियमों पालन होता है। यह नियम ही भारतीय शास्त्रीय संगीत को अन्य राष्ट्रों के संगीत से अगल बनता है। भारतीय सभ्यता की मान्यतानुसार वेद, अपौरुषेय आदि सभी ग्रन्थ समस्त विद्याओं के स्त्रोत है। यह तो नहीं कहा जा सकता कि कब, किस व्यक्ति को वैदिक ऋचाओं के गान का विचार सूझा, परन्तु यह अवश्य कहा का सकता कि किस काल में किस युग–पुरुष के मन में यह विचार आया था कि वैदिक ऋचाओं को गाकर प्रयुक्त किया जाए। ऋचाओं को वर्णन यजुष् को यजन और साम को स्तुति का साधन माना गया है। साम चारों वेदों में श्रेष्ठ कहा गया और वेदव्यास के अनुसार भगवान कृष्ण के मुख से शब्द निकले– मैं वेदों में सामवेद हूँ। इसके पश्चात् पंचम वेद के रूप में नाट्यशास्त्र को जाना जाता है। इस ग्रन्थ में संगीत का सम्पूर्ण सार समाहित है। इस प्रकार वेदों से संगीत आरम्भ हुआ और ग्रन्थो में बदलता गया। यही ग्रन्थ और शास्त्र शास्त्रीय संगीत का आधार बन गए। संगीत के मुख्य ग्रंथों के रूप में नाट्यशास्त्र, बृहद्देशीय, संगीत रत्नाकर आदि ग्रंथों को रखा गया। यह ग्रन्थ संगीत की सभी विधाओं को वर्णित करते है।

इसी क्रम में प्रस्तुत शोध में संगीत रत्नाकर में वर्णित तंत्री वाद्यों को ध्यान में रखते हुए। उनके वर्तमान स्वरूप का विकास और उपयोगिता को प्रस्तुत करना है। पं० शारंगदेव जी द्वारा रचित संगीत रत्नाकर 13वीं शताब्दी का ग्रन्थ है। जिसे सात अध्यायों में बांटा गया है– स्वराध्याय, राग–विवेकाध्यय, प्रकीर्णाकाध्याय, प्रबंधाध्याय, तालाध्याय, वाद्याध्याय और नर्तनाध्याय। जिसमें से छठा अध्याय वाद्याध्याय है। जिसमें वाद्य, वाद्य वर्गीकरण तथा उसकी विस्तृत जानकारी दी गई है। प्रस्तुत शोध के माध्यम से शोधार्थी द्वारा संगीत रत्नाकर में

वर्णित तंत्री वाद्यों का अध्ययन कर वर्तमान वाद्यों के सन्दर्भ में उनकी उपयोगिता व् प्रासंगिकता को सिद्ध करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत विषय पर शोध करने की आवश्यकता(Need of Research on This Topic)

आवश्यकता आविष्कार की जननी है, यह पंक्ति बचपन से सुनते आ रहे है और यह पूर्णतः सत्य भी प्रतीत होता है, क्योंकि संगीत में भी इसी आवश्यकता के अंतर्गत समय–समय पर नवीन खोजों को स्थान दिया गया है। इस विषय पर भी शोध की आवश्यकता आने वाली पीढ़ी को अपनी विरासत से रूबरू कराने की है। संगीत रत्नाकर में वर्णित तंत्री वाद्य, जो आज लगभग विलुप्त हो गए है या फिर अन्य नाम से जाने जाते है, उनको जानने की जिज्ञासा व् उनके वादन शैली को समझने हेतु यह विषय चुना गया है, क्योंकि ये वाद्य आज किस रूप में प्रयोग हो रहे, इसकी संगीत के क्षेत्र में क्या उपद्यता है, या क्या प्रयोग है ? उसको समझना और वर्तमान में उपस्थित वाद्य में वह किस वाद्य में सदृश्य है, इसको समझने का प्रयास प्रस्तुत शोध में करने के उद्देश्य हेतु विषय के चयन में रूचि रखते हुए, शोधार्थी कार्य प्रस्तुत किया गया है।

परिकल्पना (Hypothesis)

शास्त्रीय संगीत का आधार शास्त्र है, जब तक शास्त्रों को नहीं समझा जायेगा, शास्त्रीय संगीत समझ नहीं आएगा। संगीत रत्नाकर एक बृहद् ग्रन्थ है। इसे सप्ताध्यायी नाम से भी जाना जाता है। यह ग्रन्थ को 13 वीं शताब्दी में लिखा गया। इस समय भारत में गुलाम वंश का काल था। पं० शारंगदेव जी ने इस ग्रन्थ के मध्यम से संगीत को एक नवीन भेंट दी है। जो कि आज भी शास्त्र के रूप में अध्ययन की जाती है। इस ग्रन्थ का प्रत्येक अध्याय अपने आप में एक महन खोज व् ज्ञान का भंडार है। इस ग्रन्थ में 7 अध्याय है और सभी अध्याय संगीत की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है –स्वराध्याय, राग–विवेकाध्यय, प्रकीर्णाकाध्याय, प्रबंधाध्याय, तालाध्याय, वाद्याध्याय और नृत्याध्याय इस ग्रन्थ के अध्याय है। यह ग्रन्थ संगीत के प्रत्येक पहलू को स्पष्ट करता है। इसी ग्रन्थ में वर्णित तंत्री वाद्यों का अध्ययन करने के उद्देश्य से इस शोध कार्य में शोधार्थी की रूचि है, जिसके माध्यम से वर्तमान तंत्री वाद्यों के

पूर्व के स्वरूप को समझा जा सके। तंत्री वाद्य की बनावट, स्वरूप, वादन शैली, उसकी उपयोगिता आदि की स्थिति को समझा जा सके।

आंकड़े एकत्र करने की विधि (Data collection Methodology)

उत्तर भारतीय संगीत में ग्रंथो का बहुत महत्त्व है। पं० शारंगदेव द्वारा रचित संगीत रत्नाकर एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। प्रस्तुत शोध में तंत्री वाद्यों के विषय में जानकारी को एकत्र करने हेतु। सम्बंधित लेखों, पुस्तकों, ग्रंथो आदि का अध्ययन किया गया है, साथ ही यह युग तकनीकों का युग है, तो सम्बन्धित तकनीकों का उपयोग किया गया। सोशल मिडिया का समूचित उपयोग किया है। वह सभी तकनीक आंकड़ो को संकलित करने का प्रयास किया गया है।

पुनरावलोकन (Review of literature)

ग्रंथो और पुस्तकों में वर्णित तंत्री वाद्य सम्बन्धित विषय को ध्यान में रखते हुए, पुर्नाविति से बचने के सभी उपयोग किया गया है। जिससे विषय की उपयोगिता बनी रहे और कार्य की पुर्नावृति न हो और सम्बन्धी कार्य का पूर्ण अवलोकन संभव हो सके।

उद्देश्य (Objective)

प्रत्येक शोध का मुख्य उद्देश्य विषय की प्रासंगिकता को सिद्ध करना होता है। उसी प्रकार इस विषय का भी एक निश्चित उद्देश्य है, कि आने वाली पीढ़ीं को अपने ग्रन्थों से अवगत कराया जाए और प्राचीन तंत्री वाद्यों से रूबरू करा, उसके पुराने से नए रूप में बदलते स्वरूप को दर्शाया जाए अर्थात संगीत रत्नाकर में वर्णित तंत्री वाद्यों को आज के वाद्य और उनके स्वरूप में आये परिवर्तन को समझा जा सके और वह वाद्य आज किस रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है और उसका उपयोग किस रूप में हो रहा, वह एकल वाद्य के रूप में मौजूद है या संगत वाद्य के रूप में इसे ही प्रस्तुत शोध के माध्यम से बतलाने का प्रयास किया गया है। ग्रन्थ सदैव ही नए तथ्यों को उजागर करते है। ग्रन्थ ही शास्त्रीय संगीत का आधार है। यदि शास्त्र का ज्ञान कम होगा तो उसके क्रियात्मक पक्ष को समझना भी मुश्किल होगा या फिर यूं कहे की शास्त्र और क्रियात्मक दोनों की एक दूसरे के पूरक है, शास्त्र को समझने के लिए क्रियात्मक का ज्ञान और क्रियात्मक को समझने के लिए शास्त्र

को समझना परम आवश्यक है। यही ग्रन्थोंमें वर्णित वाद्यों को नहीं जाना जायेगा, तो होने वाले नए परिवर्तनों का आधार क्या बनेगा? इस कारण ही शोधार्थी प्रस्तुत विषय पर कार्य कर तंत्री वाद्यों को समझने का प्रयास किया है। जिससे ग्रंथो में दिए गए, भारतीय शास्त्रीय संगीत को समझा जा सके।

शोधकार्य पद्धति एवं योजना (Research Methodology & Planning)

यह शोध कार्य 13वीं शताब्दी में रचित ग्रन्थ के आधार पर तंत्री वाद्यों को वर्तमान परिप्रेक्ष्य से जोड़ कर उसकी उपयोगिता और प्रासंगिकता का अध्ययन किया है। इसमें एकतन्त्री वीणा आदि जैसे तंत्री वाद्य से सम्बधित गुणीजनों, लेखकों, इतिहासकारों, शास्त्रकारों, विद्वानों आदि के मत जो पुस्तकों आदि में प्राप्त होते है उन्हें वर्णित किया गया है।

शोध कार्य की सीमा (Limitation of Research)

प्रस्तुत शोध कार्य की जानकारी एकत्र करने हेतु 13वीं शताब्दी में रचित ग्रन्थ संगीत रत्नाकर का अध्ययन कर ग्रन्थकार द्वारा किये गए, तंत्री वाद्य की बारीकियों को समझने का प्रयास किया गया है। इसी उद्देश्य से इस कार्य की सीमा 13वीं शताब्दी में रचित ग्रन्थ संगीत रत्नाकर ग्रंथ में वर्णित तंत्री वाद्यों का वर्तमान तंत्री वाद्यों के स्वरूप का अध्ययन तक ही सिमित किया गया है।

आकांक्षा बाजपेयी

अनुक्रमणिका

अध्याय	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या
	कृतज्ञता	**iii**
	प्रक्कथन	**v**
अध्याय–1	**13वीं शताब्दी में भारतीय संगीत एंव इतिहास**	**1–35**
1.1	दिल्ली सल्तनत	3
1.1.2	गुलाम वंश 1206–1290	5
1.1.2	कुतुबुद्दीन ऐबक 1206–1210	5
1.1.3	शम्सुद्दीन इल्तुतमिश 1210–1236 ई०	5
1.1.4	रजिया सुल्तान 1236–40	6
1.2	13वीं शताब्दी में भारत के अन्य राज्य	7
1.2.1	पाण्ड्य राजवंश (580ई०–1500ई०)	8
1.2.2	चोल राजवंश (871 ई०–1279 ई०)	8
1.2.3	चेर राजवंश (1700ई0पू0–1314ई0)	9
1.2.4	पूर्वी गंग राजवंश (496ई0–1434ई0)	9
1.2.5	मेवाड़ के गुहिल राजवंश(728ई0–1947ई0)	10
1.2.6	सौराष्ट्र चालुक्य (940ई०–1244ई०)	10
1.2.7	सेन वंश (1070–1230ई0)	11
1.2.8	परमार (800–1327ई0)	11
1.2.9	चन्द वंश (700–1790ई0)	12
1.2.10	होयसल वंश (1000–1346ई0)	12
1.2.11	काकतीय राजवंश (1000–1326ई0)	13
1.2.12	देवगिरि के यादव (850–1334ई0)	13
1.2.12.1	सिंहण द्वितीय 1210 से 1247	16
1.3	13वीं से 18वीं शताब्दी के मध्य रचित ग्रन्थ	18

1.3.1	पालकुरिकी सोमनाथ कृत पंडिताराध्य चरित्र	19
1.3.2	जयना कृत नृत्य रत्नावली	20
1.3.3	राणा हम्मीर देव कृत श्रृंगार हार	20
1.3.4	शारदातनय कृत भावप्रकाशन	21
1.3.5	आचार्य पार्श्वदेव कृत संगीत समासार	22
1.3.6	वाचनाचार्य सुधाकलश कृत संगीतोपनिषत्सारोद्धार	22
1.3.7	पं० लोचन कृत रागतरंगिणी	23
1.3.8	पंडित दामोदर कृत संगीत दर्पण	24
1.3.9	आर्चाय शुभांकर कृत संगीत दामोदर	25
1.3.10	पुंडरीक विट्ठल कृत सद्रागचंद्रोदय, रागमाला रागमंजरी तथा नर्तन निर्णय	26
1.3.11	महाराणा कुम्भा कृत संगीत राज	27
1.3.12	राजा मानसिंह तोमर कृत मानकौतुहल	27
1.3.13	रामामात्य कृत स्वरमेलकलानिधि	28
1.3.14	पं० अहोबल कृत संगीत पारिजात	29
1.3.15	सोमनाथ कृत रागविबोध	30
1.3.16	पं० श्रीनिवास कृत रागतत्वविबोध	32
1.3.17	चतुर्दण्ड़ीप्रकाशिका	33

अध्याय–1 13वीं शताब्दी में भारतीय संगीत एंव इतिहास

इस शोध प्रबन्ध का प्रथम अध्याय 13वीं शताब्दी के ऐतिहासिक विवेचन पर आधारित है। जिसके अर्न्तगत शोधार्थी द्वारा अपने विषय की आवश्यकता व वस्तुनिष्ठता हेतु, 13वीं शताब्दीं के 1210 ई० से 1247 ई० के समय को व भारत की आन्तरिक स्थिति को जानने का प्रयास किया गया है। इस काल को परिवर्तन के काल के रूप में जाना जा सकता है। क्योंकि दो विपरीत स्वभाव की संस्कृतियों का आपसी द्वन्द भारत की भूमि पर स्पष्ट देखा जा सकता था। विषय के महत्व और वस्तुनिष्ठता हेतु इतिहास की जानकारी अतिआवश्यक प्रतीत होती है। इसी के फलस्वरूप भारत की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व सांस्कृतिक परिस्थित पर प्रकाय डालनें का प्रयास किया गया है। भारत कई छोटे–छोटे राज्यों में विभक्त था। कहीं

राजपूत थे तो कहीं चोल, चेर, चालुक्य, यादव, काकतीय इत्यादी थे। जिस कारण आपसी संघर्ष चलता रहा। इसी प्रकार सांस्कृतिक रूप से भी भारतीय संस्कृति भी प्रभावित होती गयी, परन्तु विद्वानों व महान ग्रन्थकारों द्वारा संस्कृति की रक्षा हेतु उसे धरोहर के रूप में लिपिबद्ध कर संजोया गया। इन्हीं ग्रन्थों का जो 13वीं शताब्दीं से 18वीं शताब्दीं के मध्य लिपिबद्ध हुए उन्ही को क्रमबद्धता के साथ इस शोधप्रबन्ध में वर्णित किया गया है। इस अध्याय को लिखनें में शोधार्थी द्वारा जिन–जिन ग्रन्थों, ऐतिहासिक पुस्तकों व तथ्यों का अध्ययन किया गया, उससे यह निष्कर्ष शोधार्थी को प्राप्त होता है, कि परिवर्तन व आवश्यकता अविष्कार को जन्म देती है और साथ ही इतिहास प्राचीन से वर्तमान में हो रहे बदलाव को वर्णित करता है।

इस प्रकार प्रस्तुत अध्याय के अध्ययन के पश्चात् यह ज्ञात होता है कि 13वीं शताब्दी के इस वृहद इतिहास में ही भारतीय संस्कृति का सार छिपा हुआ है। शोधार्थी द्वारा भारतीय संस्कृति को जानने की चेष्टा स्वरूप ही इस अध्याय के अन्र्तगत भारत की सामाजिक, राजनैतिक व सांस्कृतिक स्थिति का परिचय व 13वीं सं 18वीं के मध्य रचित ग्रन्थों की जानकरी प्रस्तुत की गयी है।

अध्याय–2 पं० शारंगदेव जी का जीवनवृत्त 36–40

इस प्रकार प्रस्तुत अध्याय को शोधार्थी द्वारा संगीत रत्नाकर का अध्ययन विभिन्न मतों व तथ्यों को ध्यान में रखते हुए, लिखने का प्रयास किया है। किसी जीवनी का लेखन एक कलात्मक कार्य है, क्योंकि जीवन का वर्णन या किसी व्यक्ति विशेष के विषय में चर्चा करना अत्यंत कठिन कार्य है। जीवनी किसी आधुनिक व्यक्ति से संबंधित हो या ऐतिहासिक व्यक्ति के संदर्भ में लेखन के कार्य को अत्यंत ध्यानपूर्वक ढंग से तथा सावधानी से किया जाता है। पं० शारंगदेव जी के विषय में लिखने के पूर्व शोधार्थी द्वारा तथ्यों का अध्ययन कई प्रकार से करने का प्रयास किया गया है, जिसमें पं० शारंगदेव जी वर्णित श्लोक जो संगीत रत्नाकर में वर्णित है अर्थात वंश का वर्णन किया गया है, उसे आधार बनाकर अध्याय को प्रस्तुत किया गया है। तत्पश्चात् संगीत रत्नाकर के प्रकाशन व टीकाओं की चर्चा शोधार्थी द्वारा की गयी है। तत्पश्चात् शोधार्थी द्वारा अध्ययन से प्राप्त हुए तथ्यों को प्रस्तुत किया गया है, जिन्हें

पूर्ण रूप से या निश्चित रूप से नहीं कहा गया है, यह मात्र सम्भावना है तथा जिस पर भविष्य में शोध–कार्य संभव है।

अध्याय.3	**संगीत रत्नाकर का परिचय**	**41**
3.1	संगीत रत्नाकर का स्थान तथा रचनाकाल	**43**
3.2	संगीत रत्नाकर ग्रंथ की महत्व	**44**
3.3	संगीत रत्नाकर ग्रन्थ की टीकाएं	**46**
3.4	संगीत रत्नाकर के संस्करण	**48**
3.5	संगीत रत्नाकर ग्रन्थ का संक्षिप्तीकरण	**52**
3.5.1	स्वरगताध्याय	**53**
3.5.1.1	पदार्थ सग्रंह	**53**
3.5.1.2	पिण्डोंत्पत्ति प्रकरण	**57**
3.5.1.3	नाद, स्थान, श्रुति आदि तथा रस प्रकरण	**59**
3.5.1.4	ग्राम, मूर्च्छना, मूर्च्छना क्रम, तान प्रकरण	**66**
3.5.1.5	साधारण प्रकरण	**72**
3.5.1.6	वर्णालंकार प्रकरण	**73**
3.5.1.7	जाति प्रकरण	**79**
3.5.1.8	गीति प्रकरण	**85**
3.5.2	रागविवेकाध्याय	**86**
3.5.2.1	प्रथम प्रकरण ग्रामराग, उपराग, राग, भाषा, विभाषा, अन्तरभाषाविवेक नामक प्रकरण	**87**
3.5.2.2	दूसरा प्रकरण रागांगादि–निर्णय नामक	**91**
3.5.3	प्रकीर्णकाध्याय	**108**
3.5.3.1	वाग्गेकार के लक्षण	**108**
3.5.3.2	गमक	**112**
3.5.3.3	स्थाय	**112**
3.5.3.4	मिश्र स्थाय	**114**
3.5.3.5	रागालाप्ति	**116**

3.5.3.6	रूपकालप्ति	116
3.5.3.7	बृन्द	117
3.5.4	प्रबन्धाध्याय	117
3.5.4.1	गीत प्रबन्ध	118
3.5.4.2	धातु लक्षण एवं भेद	119
3.5.4.3	प्रबन्ध भेद एवं अंग	119
3.5.4.4	गीत के गुण–दोष	130
3.5.5	तालाध्याय	131
3.5.5.1	मार्गी ताल	131
3.5.5.2	देशी ताल	140
3.5.6	वाद्याध्याय	143
3.5.7	नृत्याध्याय	144

तृतीय अध्याय- संगीत रत्नाकर का परिचय

संगीत रत्नाकर जैसे वृहद ग्रन्थ को संक्षिप्त रूप में वर्णित करना अत्याधिक कठिन कार्य है, शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत अध्याय के अर्न्तगत संगीत रत्नाकर सम्बन्धित समस्त तथ्यों को वर्णित करने का प्रयास किया गया है जिसमें संगीत रत्नाकर का स्थान तथा रचनाकाल की चर्चा को करते हुए सम्बन्धित तथ्यों को वर्णित किया गया है। संगीत रत्नाकर ग्रन्थ की महत्वता को कहा है क्योंकि संगीत रत्नकर संगीत जगत का सबसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ है इस तथ्य को स्वीकार करते हुए, महत्वता की चर्चा की गयी है। संगीत रत्नाकर ग्रन्थ की टीकाएं तथा संगीत रत्नाकर के संस्करणों को विस्तार से कहा है, जिसमें प्रकाशित संस्करण व प्राप्त टीकाओं को कहा है संगीत रत्नाकर जैसे महान ग्रन्थ पर सर्वाधिक टीकाओं की रचना की गयी है, संगीत रत्नाकर ग्रन्थ का संक्षिप्तीकरण करते हुए सातों अध्यायों को शोधार्थी द्वारा अपनी सूझ–बूझ के अनुसार वर्णित करने का प्रयास किया गया है।

जिसके अर्न्तगत स्वराध्याय, रागविवेकाध्याय, प्रबन्धाध्याय, प्रकीर्णाध्याय, तालाध्याय, वाद्याध्याय तथा नृत्याध्यायों को वर्णित करते हुए सभी अध्यायों को उपाध्यायों में वर्गीकृत करते हुए उन्हें संक्षिप्त रूप में कहने का प्रयास किया गया है। शोधार्थी द्वारा वाद्याध्याय को प्रस्तुत अध्याय

के अन्तर्गत अधिक विस्तार से नहीं कहा गया है व वाद्याध्याय को प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के ही चौथें अध्याय के अन्तर्गत कहा गया है। व ताल व नृत्य सम्बन्धित अध्याय को मात्र शोध प्रबन्ध के अन्तर्गत कार्य की आवश्यकता के अनुसार ही कहा गया है शोधार्थी का मुख्य विषय वाद्याध्याय से सम्बन्धित है जिस करण अन्य अध्यायों को अध्ययन के पश्चात् कार्य के अनुसार ही व्यक्त किया गया है।

अध्याय–4	**वाद्यों की एतिहासिकता एंव वाद्य वर्गीकरण संगीत रत्नाकर के संदर्भ में**	**148–188**
4.1	वाद्यों का उद्‌भव	**149**
4.2	वाद्य वर्गीकरण	**152**
4.2.1	तत् वाद्य	**157**
4.2.2	अवनद्ध वाद्य	**150**
4.2.3	सुषिर वाद्य	**160**
4.2.3	घन वाद्य	**161**
4.3	संगीत रत्नाकर वर्णित वाद्याध्याय	**163**
4.3.1	वाद्य वर्गीकरण	**164**
4.3.2	तन्त्री वाद्य	**166**
4.3.3	सुषिर वाद्य	**166**
4.3.3.1	वंश	**167**
4.3.3.2	पाव	**171**
4.3.3.3	पाविका	**171**
4.3.3.4	मुरली	**171**
4.3.3.5	मधुकरी	**171**
4.3.3.6	काहला	**172**
4.3.3.7	तुण्डकिनी	**172**
4.3.3.8	चुक्का	**172**
4.3.3.9	श्रृंग	**172**
4.3.3.10	शंख	**173**

4.3.4	अवनद्ध वाद्य	173
4.3.4.1	पटह	174
4.3.4.1.1	मार्गी पटह	174
4.3.4.1.2	देशी पटह	174
4.3.4.2	मर्दल	175
4.3.4.3	हुडुक्का	177
4.3.4.4	करटा	177
4.3.4.5	घट	178
4.3.4.6	घडस	178
4.3.4.7	ढ़वस	178
4.3.4.8	ढ़क्का	178
4.3.4.9	कुडुक्का	179
4.3.4.10	कुडुवा	179
4.3.4.11	रूंजा	179
4.3.4.12	डमरूक	180
4.3.4.13	डक्का	180
4.3.4.14	मणिडडक्का	180
4.3.4.15	ड़क्कुली	181
4.3.4.16	सेल्लुका	181
4.3.4.17	झल्लरी	181
4.3.4.18	भाण	181
4.3.4.19	त्रिवली	182
4.3.4.20	दुन्दुभि	182
4.3.4.21	भेरी	182
4.3.4.22	निःसाण	182
4.3.4.23	तुम्बकी	183

4.3.4.24	काष्ठलक्षणम्	**183**
4.3.4.25	चमड़े के गुण	**183**
4.3.5	घन वाद्य	**184**
4.3.5.1	ताल	**184**
4.3.5.2	कास्यताल	**185**
4.3.5.3	घटां	**185**
4.3.5.4	क्षुद्रघंटिका	**185**
4.3.5.5	जयघण्टा	**185**
4.3.5.6	क्रमा	**185**
4.3.5.7	शुक्ति	**186**
4.3.5.8	पट्ट	**186**
4.3.5.9	गुण एंव दोष	**186**
4.3.5.10	वादक के गुण एंव दोष	**187**
4.3.5.11	वादक के हस्त गुण	**187**

अध्याय–4 वाद्यों की एतिहासिकता एंव वाद्य वर्गीकरण संगीत रत्नाकर के संदर्भ में

शोधप्रबन्ध के प्रस्तुत अध्याय के अन्तर्गत वाद्य शब्द तथा वर्तमान वाद्य वर्गीकरण को प्रस्तुत करते हुए। संगीत रत्नाकर वर्णित वाद्याध्याय को संक्षिप्त रूप से शोधार्थी द्वारा इस शोध प्रबन्ध की आवश्यकता के अनुरूप प्रस्तुत किया गया है। वाद्य वर्गीकरण के अन्तर्गत तत्, सुषिर, अवनद्ध तथा घन वाद्यों को व्याख्यित किया गया है। इसके पश्चात् संगीत रत्नाकर वर्णित वाद्यध्याय को वर्णित किया गया है। वाद्याध्याय के अन्तर्गत 1221 श्लोकों प्राप्त होते है जिसमें सम्पूर्ण वाद्य वर्गीकरण, वाद्यों का विस्तृत वर्णन पं० शारंगदेव जी द्वारा कहा गया है। संगीत रत्नाकर के वाद्याध्याय में मंगलाचरण के पश्चात् वाद्य निरूपण तथा वर्गीकरण को कहा गया है, जिसमें तत्, सुषिर अवनद्ध तथा अन्त में घन वाद्यों को वर्णित किया गया है। वाद्याध्याय के अर्न्तगत दस तन्त्री वाद्यों जिनमें एकतंत्री वीणा, नकुल वीणा, चितन्त्री वीणा, विपंची वीणा, चित्रा वीणा, मत्तकोकिला वीणा, किन्नरी वीणा, पिनाकी वीणा तथा निःशंक वीणा को कहा गया है, इसके पश्चात् सुषिर वाद्यों को कहा है जिनके नाम वंश, पाव, पाविका,

मुरली, मधुकरी काहला, तुण्डकिनी, चुक्का, श्रृंग,शंख प्राप्त होते है। साथ ही वंश को मुख्य वाद्य के रूप में वर्णित करते हुए आकार के अनुसार वंश के पन्द्रह भेदों को पं० शारंगदेव जी द्वारा कहा गया है। अवनद्ध वाद्यों को वर्णित करते हुए पटह को वर्णित दो भेंद पटह के कहे गए है। मार्गी पटह तथा देशी पटह। तत्पश्चात् कुल 23 अवनद्ध वाद्यों का वर्णन प्रस्तुत किया गया है व सभी वाद्यों का वर्णन वादन लक्षण, वाद्य निर्माण विधि आदि को कहा गया है। संगीत रत्नाकर वर्णित पटह के अतिरिक्त अन्य अवनद्ध वाद्य मर्दल, हुडुक्का, करटा, घट, घडस, ढ़वस, ढ़क्का, कुडुक्का, कुडुवा, रूंजा, डमरूक, डक्का, मणिडडक्का, ड़क्कुली, सेल्लुका झल्लरी, भाण, त्रिवली, दुन्दुभि, भेरी, निःसाण नाम से वर्णित किए गए है। अन्त में घन वाद्यों को कहा गया है। जिसमें आठ प्रकार के घन वाद्यों ताल, कास्यताल, घटां, क्षुद्रघंटिका, जयघण्टा, क्रमा, शुक्ति, पट्ट का वर्णन किया गया है। साथ ही उनकें लक्षणों को कहा है।

इस प्रकार शोधार्थी द्वारा सम्पूर्ण वाद्याध्याय को वर्णित किया गया है, साथ ही अध्ययन द्वारा भारतीय संस्कृति की अनमोल धरोहर पर गर्व को महसूस किया जा सकता है कि कितनी अमूल्य संस्कृति को ऋषि–मुनियों व विद्वानों द्वारा भारतीय संगीत को भेंट की गयी है व यह भी ज्ञात होता है कि प्राचीन वाद्य ही वर्तमान वाद्यों की मूल संरचना है।

अध्याय–5	**संगीत रत्नाकर में वर्णित तन्त्रीं वाद्यों का अध्ययन**	**189–330**
5.1	तन्त्री वाद्य	**191**
5.2.1	एकतन्त्री वीणा	**195**
5.2.1.1	पं० शारंगदेव वर्णित एकतन्त्री वीणा के लक्षण	**200**
5.2.1.2	एकतन्त्री की स्तुति	**204**
5.2.1.3	एकतन्त्री वीणा में देवताओं का स्थान	**205**
5.2.1.4	एकतन्त्री को धारण करने व वादन की विधि	**205**
5.2.1.5	वीणा वादन की विधि	**211**
5.2.1.6	विचित्र वीणा	**215**
5.2.1.7	स्व० पं० लालमणि मिश्र	**218**
5.2.2	नकुल	**221**
5.2.3	त्रितन्त्री	**223**

5.2.3.1	यन्त्र	227
5.2.3.2	सितार	228
5.2.3.2.1	सितार वाद्य का स्वरूप	234
5.2.3.2.2	सितार में प्रयुक्त होने वाली तकनीकी परिभाषायें	235
5.2.3.2.3	सितार के विभिन्न बाज	237
5.2.3.2.4	सितार के प्रकार	240
5.2.3.2.5	पं० रविशंकर	241
5.2.3.2.6	उ० विलायत खाँ	245
5.2.3.3	तम्बूरा	248
5.2.3.3.1	तानपुरे का स्वरूप	253
5.2.4	चित्रा	254
5.2.4.1	रबाब	258
5.2.4.2	सुरसिंगार	262
5.2.4.3	सरोद	264
5.2.4.3.1	सरोद की बनावट	264
5.2.4.3.2	उस्ताद अलाउद्दीन खाँ	266
5.2.4.3.3	उस्ताद अमजद अली खाँ	268
5.2.5	विपंची	269
5.2.5.1	संतूर	274
5.2.5.1.1	संतूर वाद्य की बनावट	276
5.2.5.1.2	शिव कुमार शर्मा	277
5.2.5.1.3	भजन सोपोरी	278
5.2.5.2	कानून	279
5.2.6	मत्तकोकिला	281
5.2.6.1	स्वरमंडल	287
5.2.7	आलापिनी	290

5.2.7.1	तुइला	296
5.2.8	किन्नरी वीणा	297
5.2.9	पिनाकी वीणा	309
5.2.9.1	वायलिन/बेला	317
5.2.9.1.1	वायलिन के अंग	320
5.2.9.1.2	पद्म भूषण वी० जी० जोग	321
5.2.9.1.3	पद्मभूषण एन० राजम्	323
5.2.10	निःशंक वीणा	324

अध्याय–5 संगीत रत्नाकर में वर्णित वाद्यों का अध्ययन

प्रस्तुत अध्याय के माध्यम से शोधार्थी द्वारा संगीत रत्नाकर में वर्णित तंत्री वाद्य अर्थात वाद्याध्याय में वर्णित समस्त वीणाओं का अध्ययन कर उन वीणाओं के वर्तमान स्वरूप को खोजने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत तंत्र शब्द का अर्थ उसकी व्याख्या को वर्णित किया गया है, तत्पश्चात् संगीत रत्नाकर में वर्णित समस्त दस वीणाओं को वर्णित करते हुए, उनके वर्तमान स्वरूप व संबंधित कलाकारों के विषय में वर्णन प्रस्तुत किया गया है। संगीत रत्नाकर के वाद्याध्याय के अंतर्गत तंत्री वाद्यों के संबंध में एकतंत्री वीणा, नकुल वीणा, त्रितन्त्री वीणा, विपंची वीणा, चित्रा वीणा, मत्तकोकिला वीणा, किन्नरी वीणा, पिनाकी वीणा तथा निःशंक वीणा का वर्णन प्राप्त होता है। जिसमें से कुछ वीणाएं वर्तमान प्रयोग में लायी जा रही है। कुछ वीणाएं विलुप्त हो चुकी है, कुछ को साक्ष्यों के अभाव में लुप्त मान लिया गया है तथा कुछ वीणाएं वर्तमान में भी लोक वाद्यों के रूप में प्रचलित है। वीणाओं के परिवर्तित स्वरूप से प्राचीन वीणाओं को लुप्त मान लेना उचित प्रतीत नहीं होता है।

गहनता से अध्ययन किया जाए, तो यह निष्कर्ष प्राप्त होता है, कि कोई भी वीणा लुप्त नहीं है, परंतु रूप में परिवर्तन अवश्य दृष्टिगोचर होता है। वर्तमान में जितनें भी तन्त्री वाद्य प्रयोग में लाए जा रहे है वह किसी ना किसी वीणा का आधुनिक स्वरूप ही है, क्योंकि इतिहास ही वर्तमान का आधार है और इतिहास के अध्ययन द्वारा ही वर्तमान को नवीन शैलियों द्वारा परिवर्तित किया जा सकता है। वर्तमान में प्रयुक्त हो रहे सितार, विचित्र वीणा, सरोद, संतूर इत्यादि सभी तंत्री वाद्य समय के गर्भ से ही प्राप्त हुए है। इन्हीं को वादको द्वारा वादन क्रिया

की सुविधा के अनुरूप परिवर्तित किया गया है। एकतंत्री वीणा को घोष, घोषवती इत्यादि नामों से पुकारा जाता है। एक मत के अनुसार ब्रह्मा जी की वीणा होने के कारण एकतन्त्री वीणा को ब्रह्मी वीणा के नाम से भी जाना गया है। जिसके दर्शन से गौ–हत्या जैसे महापाप भी मुक्ति प्राप्ति हो जाती है।

इस प्रकार एकतंत्री को अत्यंत प्राचीन वीणा कहा गया है व तथ्यों के आधार पर एकतन्त्री वीणा को विचित्र वीणा कहा गया है, जो सारिका रहित वाद्य है। इस तथ्य की पुष्टि पंडित लालमणि मिश्र जी द्वारा भी की गई है। इसी क्रम में त्रितन्त्री वीणा से सितार, तंबूरा, मत्तकोकिला वीणा से स्वरमंडल इत्यादि वाद्ययों के विषय में शोधार्थी द्वारा वर्णन प्रस्तुत किया गया है कि भारतीय सभ्यता अति प्राचीन काल से ही विश्व की सबसे समृद्ध तथा सुसंस्कृत सभ्यताओं के रूप में स्वीकारी गई है। भारतीय सभ्यता स्थापत्य, कला, राजनीति, विज्ञान इत्यादि सभी क्षेत्र में सभी प्रकार से परिपूर्ण मानी जाती है। हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो से मिले साक्ष्य संपूर्ण विकसित नगरी व्यवस्था का उत्कृष्ट उदाहरण है, जो भारतीय सभ्यता की संस्कृति को और समृद्ध बनाती है। इस क्रम में जब अध्ययन किया जाता तो ज्ञात होता है कि जब इस सभ्यता को इतनी समृद्धता प्राप्त है, तो उसका संस्कृतिक तथा धार्मिक पक्ष कितना समृद्ध होगा, क्योंकि भारत उस दिव्य धरती के रूप में स्वीकारा जाता है, जहां वेदो, वेदांगों, उपनिषदों तथा पुराणों की रचना हुई है और यही वेद भारतीय संगीत का भी आधार कहे गए है। सामवेद को संगीत का आधार ग्रंथ माना जाता है, ऋग्वेद की ऋचाओं का ही गेय रूप सामवेद में प्राप्त होता है। सामवेद में गायन, वादन, नृत्य सभी का वर्णन प्राप्त होता है। सामकालीन संगीत देवताओं की उपासना हेतु प्रयोग में लाया जाता था, जिसके पश्चात् संगीत मार्गी तथा देसी संगीत के रूप में विभक्त हुआ और देसी संगीत लोकरंजन हेतु प्रयोग किया जाने लगा। संगीत के इस रूप द्वारा ही विभिन्न प्रकार के वाद्यों का निर्माण स्वाति तथा तंबूरू मुनि द्वारा किया गया।

इस प्रकार तत्, अवन्द्ध तथा घन वाद्ययों की उत्पत्ति हुयी। एक वाद्य से दूसरे वाद्य का निर्माण कुछ परिवर्तनों व कुछ निर्माण की आवश्यकता अनुसार व वादन की सुविधा अनुसार किया जाने लगा। इस प्रकार से इतना समृद्धता से परिपूर्ण संगीत के वाद्यों की नींव स्थापित हो गयी। विचार का विषय यह है, कि जब भारतीय संस्कृति इतनी परिपक्व और समृद्ध थी,

जिसके साक्ष्य ग्रन्थों, शिलालेखों, अभिलेखों इत्यादि से प्राप्त होते है तो यह कैसे संभव है, कि वर्तमान में प्रयुक्त होने वाले सभी वाद्य फारसी, ईरानी, यूरोपीय, अरबी आदि देशों से ही भारत आए? इन सभी तथ्यों के अध्ययन के पश्चात् शोधार्थी को यह प्रतीत होता है, कि जो भी तंत्री वाद्य जो वर्तमान में भारतीय संगीत कला में प्रयोग किए जा रहे है या जो संगीत रत्नाकर में वर्णित तंत्री वाद्य प्राप्त होते है, वह सभी तंत्री वाद्य पूर्ण रूप से भारतीय वाद्य ही है। विदेशी आक्रमणों, व्यापारियों के आगमन आदि द्वारा जो भारतीय संस्कृति को क्षति पहुंचाई गई, उसी का निष्कर्ष है कि भारतीय सभी वाद्यों को विदेशी वाद्य कहा जाने लगा। इस तथ्य को कुछ इस प्रकार भी समझा जा सकता है, कि भारतीय वाद्य मात्र उन्हीं क्षेत्रों से ही प्रभावित है जहां–जहां से यह व्यापारी या आक्रांत भारत में आए। इस कारण सितार को फारसी, रबाब को अरबी इत्यादि सभी वाद्यों को भी फारस तथा अरब के वाद्यों के रूप में ही स्वीकार करने लगे और अंत में भारत में विदेशी व्यापार की नियत से आए यूरापियों द्वारा वायलिन को भी विदेशी वाद्य के रूप में स्वीकारने पर विवश कर दिया। यदि प्राप्त मूर्तियों, ग्रन्थों, चित्रों, को देखा जाए तो ज्ञात होता है कि वर्तमान वाद्यों का मूल स्वरूप एकतंत्री, चित्रा, विपंची, में त्रितन्त्री, पिनाकी में ही प्राप्त होता है। इस प्रकार भारत संगीत कला के अर्न्तगत जितने भी तंत्री वाद्य प्राप्त होते है, उन्हें भारतीय वाद्य के रूप में स्वीकारा जाना ही भारतीय संस्कृति की धरोहर को और अधिक समृद्ध बनाने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

	उपसंहार	**330–334**
	संदर्भिका	**335–341**
शोध–लेख–1	**भैरवी– संगीतरत्नाकर वर्णित तन्त्री वाद्य : एक अध्ययन**	**343**
शोध–लेख–2	**संगीतिका– पं० शारंगदेव जी द्वारा वर्णित पिनाकी वीणा**	**352**

उपसंहार

संगीत भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है, जिसके साक्ष्य वैदिककालीन ग्रन्थों से प्राप्त होते है। वेदों से संगीत की प्राप्ती के पूर्ण साक्ष्य प्राप्त भी हुए है और इसे सम्पूर्ण विश्व द्वारा भी स्वीकारा जाता है, जिससे भारतीय संस्कृति तथा संगीत का प्रभाव समस्त विश्व में देखने को मिलता है। प्रत्येक शोध किसी न किसी जिज्ञासा के ही फलस्वरूप किया जाता है, क्योंकि कुछ जानने के उद्देश्य से जब तथ्यों को एकत्र किया जाता है वह उत्सुक्ता को भी जन्म देता

है। प्रस्तुत शोधकार्य भी इसी उत्सुक्ता के ही फलस्वरूप किया गया है। प्रस्तुत शोधकार्य का कार्य क्षेत्र ऐतिहासिक है। ऐतिहासिक विषय का चुनने का कारण भारतीय धरोहर को जानना व ऐतिहासिक ग्रन्थों का अध्ययन व उस ग्रन्थ का वर्तमान में महत्वता का ज्ञान प्राप्त होता है। यदि ऐतिहासिक पक्षों के विषयों पर अध्ययन नहीं किया जाएगा जो कुछ तथ्यों को किवदन्दियों के अधार पर ही स्वीकार किए जाते रहेंगें और अमूल्य संस्कृतिक धरोहर का कुछ स्थानों पर गलत अंकन होता रहेंगा उसके लिए आवश्यक है कि समस्त ग्रन्थों का अध्ययन किया जाए और जिससे संगीत के क्षेत्र में नवीन परिक्षणों को किया जाए और उन्हें तर्कों के मध्यम से प्रमाणित भी किया जाए।

संगीत रत्नाकर संगीत के क्षेत्र का सर्वमान तथा सर्वाधिक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है, जो एक अत्यन्त वृहद ग्रन्थ के रूप में जाना जाता है। संगीत रत्नाकर के विषय में संगीत के क्षेत्र में प्रवेश करने वाले प्रत्येक विद्यार्थी और गुनीजनों सभी के द्वारा जानना आवश्यक माना जाता है। संगीत का वह महान रत्नाकर है, जिसमें संगीत जगत का प्रत्येक रत्न प्राप्त होते है। संगीत रत्नाकर को जाने बिना संगीत का समझपाना एक कठिन कार्य है। पं० शारंगदेव जी द्वारा 13वीं शताब्दी में रचित यह महान ग्रन्थ पं० शारंगदेव जी संगीत को अभूतपूर्व भेंट है, जिसमें संगीत के प्रत्येक पक्ष का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। पं० शारंगदेव जी द्वारा इस महान ग्रन्थ की रचना देवगिरि के यादव वंश के संरक्षण में की गयी, 1210 ई० से 1247 ई० के मध्य का काल सिंहण नरेश का काल माना जाता है, इसी काल में संगीत रत्नाकर की रचना मानी जाती है। सिंहण नरेश स्वंय भी संगीत का प्रेमी था। जिसने अपने दरबार में कई महान संगीतज्ञों को संरक्षण प्रदान किया। इसी के फलस्वरूप भारत की संस्कृतिक धरोहर को संरक्षण प्राप्त हो सका और संगीत रत्नाकर जैसे महान संगीत ग्रन्थ की रचना सम्भव हो सकी।

शोधार्थी को ऐसा प्रतीत होता है, कि संगीत रत्नाकर संगीत के सभी छोटे–बड़े तथ्यों व ग्रन्थों का एक सम्मिलित ग्रन्थ है, जिस कारण इसे संगीत रत्नाकर कहा गया। जिस प्रकार छोटी–छोटी नदियां सभी एक समुद्र में मिलती है, और वह समुद्र कहलाता है, उसी प्रकार संगीत के सभी छोटे–बड़े सभी ग्रन्थों से मिलकर संगीत के इस महान ग्रन्थ की रचना सम्भव हो सकी। जिसे संगीत का समुद्र अर्थात् रत्नाकर कहा गया है। संगीत रत्नाकर एक अत्यंत

वृहद ग्रंथ है, व शोधार्थी द्वारा शोध का विषय **“वर्तमान परिप्रेक्ष्य के सन्दर्भ में संगीत रत्नाकर में वर्णित तंत्री वाद्यों का अध्ययन”** के संदर्भ में इस कार्य को प्रस्तुत किया गया है। शोधार्थी द्वारा संगीत रत्नाकर के वाद्याध्याय में वर्णित तन्त्री वाद्यों को समझने व जानने के उद्योग से शोध प्रस्तुत किया गया है।

Biblography-संदर्भिका

➢ **ग्रन्थ**

ग्रन्थ	अनुवादक–संपादक	प्रकाशक	स्थान–वर्ष–ISBN
1. संगीत रत्नाकर कृत शारंगदेव	सुभद्रा चौधरी	राधापब्लिकेशन	नई दिल्ली, ISBN-9788174872005
2. Sangeet Ratnakar-Pt. Sharangdev	Pt. S.Subrahmanya Shastri	The Adyar Library	Madras
3. नाट्यशास्त्र–भरतमुनि	बाबूलाल शुक्लशास्त्री	चौखम्बा पब्लिकेशन	नई दिल्ली, ISBN-9789381608234
4. संगीत समयसार भाग–2 पार्श्वदेव	बृहस्पति आचार्य	भारतीय ज्ञानपीठ	दिल्ली ISBN-8126311932, वर्ष 2012
5. मानसोल्लास	भूप सोमेश्वर	प्राच्यविद्यामदिंर	बडौदा–1961
6. रस कौमुदी– श्रीकंठ	ए0 एन0जानी	प्राच्यविद्यामदिंर	बडौदा–1963
7. नाट्यशास्त्र–भरतमुनि	टीका अभिनव गुप्ताचार्य	प्राच्यविद्यामदिंर	बडौदा–2003
8. भाव प्रकाशन	शारदातनय	प्राच्य विद्या मदिंर	बडौदा–1968
9. लोचनकृत रागतरंगिणी	सहाय(डॉ०)रीना	पिलग्रिम्स पब्लिकेशन	वाराणसी
10. संगीत पारिजात–अहोबल	डॉ0 कृष्ण	चौखम्बा कृष्णदास अकादमी	वाराणसी
11. संगीत राज–महाराणा कुम्भा	प्रेमलता शर्मा	हिंदू विश्वविद्यालय संस्कृत प्रकाशन बोर्ड	वाराणसी
12. दामोदर पण्ड़ित कृत संगीत दपर्ण	भट्ट (डॉ)विश्वम्भरनाथ	संगीत कार्यालय	हाथरस

13.संगीत दर्पण	पं0 दामोदर	संगीत कार्यालय	हाथरस
14.महाराणा कुम्भा–संगीत राज	सोमानी रामवल्लभ	हिन्दी साहित्य मन्दिर	जोधपुर
15.तैतरेय ब्राह्मण	आर अनंनतकृष्ण शास्त्री	भास्करा प्रेस	त्रिरूवेन्द्रम–1942
16.सुन्दरकाण्ड़–सर्ग–10	गोस्वामीतुलसीदास	गीताप्रेस	गोरखपुर
17.रामायण किष्किंधा काण्ड़ सर्ग–1	गोस्वामीतुलसीदास	गीताप्रेस	गोरखपुर
18.बाल्मिकी रामायण युद्ध काण्ड सर्ग–24	गोस्वामीतुलसीदास	गीताप्रेस	गोरखपुर
19.दृ० रघुवंश	कालीदास	डायमंड पॉकेट बुक्स	ISBN–81–288–1142–8 वर्ष–2005
20.अष्टाध्यायी	पाणिनी	श्री वेड्कटेश्वर मुद्रणालय	संवते–1954, शके–1819
21.संगीतसार	तानसेन	संगीत नाटक अकादमी	पूना
22.संगीतसार	महाराणा सवाई प्रताप सिंह	प्राच्यविद्यामदिंर	बडौदा
23.राधागोविन्द संगीतसार–राजा सवाई प्रतापसिहं देव	बीटी सहस्त्रबुद्धे	गायन समाज	पूना
24.भरतभाष्य–नान्यदेव	नान्यदेव	इन्द्ररा कला संगीत विश्वविद्यालय	खैरागढ़
25.आइन–ए–अकबरी –अबुल फज़ल	बलोचमैन	एच बैपटिस्ट मिशन प्रेस	कोलकाता
26.शुक्ल यजुर्वेद	वेणीराम शर्मा गाड	चौखंभा ओरिएंटलिया	दिल्ली

27. संगीतोपनिषत्सारोद्धार	सुधा कलश	प्राच्य विद्यामदिंर	बडौदा
28. वाद्य प्रकाश	विद्याविलासी		
29. संगीत रत्नावली सोमराजदेव	भरत कोश– एम० रामकृष्णकवि	टी. टी. देवस्थानम्स प्रेस,	तिरुपति
30. शिवाष्टोत्तरशतनाम	स्वामी स्वयम्प्रकारगिरि	दक्षिणामूर्ति मठ प्रकाशन	वराणसी

➢ <u>पुस्तक</u>

1. **भारतीय सभ्यता एवम् संस्कृति**/चन्द एस.एम/द स्टूडेन्ट बुक कंपनी/जयपुर/1981
2. **भारतीय संगीत का इतिहास**/जोशी उमेश/मानसरोवर महल प्रकाशन/फिरोजपुर/1957
3. **दिल्ली सल्तनत**/श्रीवास्तव (डॉ०) आर्शीवादी लाल/दुर्गा प्रिन्टिग/आगरा
4. **मध्यकालीन भारत**/थापर रोमिला/N.C.E.R.T/New Delhi
5. **मध्यकालीन भारत**/चन्द्रा सतीश/Orient Blank Swan/2007
6. **दक्षिण भारत का बृहद् इतिहास**/दुबे (डॉ) हरिनारायण/शारदा पुस्तक भवन/ इलाहाबाद
7. **देवगिरि के यादव राजा**/बोरा राजमल/नेशनल पब्लिशिग हाउस/ISBN-8121402270
8. **दक्षिणांचल भक्ति साहित्य (भाग–1)**/तेलगु भक्ति काव्य
9. **हमारे संगीत रत्न**/गर्ग लक्ष्मी नारायण/संगीत कार्यालय/हाथरस
10. **धृपद–शाश्वत गायन शैल**/अंभोरे अर्चना माधव/Golden Research thoughts Volume 2
11. **भारतीय संगीत कोष–भाग–2**/मिश्रा (प्रो०) देवेन्द्र
12. **संगीतशास्त्र/**शास्त्री के० वासुदेव/प्रकाशन शाखा/सूचना विभाग/उ0 प्र0

13. **भारतीय संगीत का इतिहास** / शर्मा, भगवत शरण / संगीत मन्दिर, खुर्जा / **ISBN-** 8185057494

14. **वैदिककोष** / सूर्यकांत डॉ0 / चौखम्बा कृष्णदास अकादमी / नई दिल्ली, **ISBN-** 9788121803199

15. **भरत का संगीत सिद्धान्त /** बृहस्पति श्री कैलाशचन्द्रदेव / उ0प्र0 हिन्दी संस्थान, लखनऊ

16. **भारतीय संगीत एक एतिहासिक विश्लेषण /** शर्मा स्वतन्त्र / अनुभव पब्लिशिंग हाउस / ISBN– 9789380134468

17. **भारतीय संगीत का इतिहास /** पराजपे डॉ० श्रीधर शरद चन्द / **चौखम्बा** / वाराणसी

18. **उत्तर भारतीय संगीत में तन्त्रवाद्यों का स्थान एंव उपयोगिता** / सिंह (डॉ०)संगीता / कनिष्क पब्लिशिंग / दिल्ली / ISBN- 9788184571219

19. **संगीत चिन्तामणि** / आचार्य ब्रहस्पति / संगीत कार्यालय / हाथरस

20. **संगीत बोध /** पराजपे डॉ० श्रीधर शरद चन्द / चौखम्बा / वाराणसी

21. **भारतीय संगीत का इतिहास /** सिंह ठाकुर जयदेव / विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

22. **राजपाल हिन्दी–शब्दकोश** / डॉ० हरदेव बाहरी / राजपाल एंड संस / ISBN- 9788170280866

23. **वीणा प्रपाठक** / पं० परमेश्वर / संगीत कार्यालय / हाथरस

24. **भारतीय संगीत के तन्त्रीवाद्य /** माहाड़िक प्रकाश / मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल

25. **स्वर और रागों के विकास में वाद्यों का योगदान /** डॉ० इन्द्राणी चक्रवर्ती / चौखंभा ओरिएंटलिया, दिल्ली

26. **संगीत शास्त्र /** पं० के० वासुदेवशास्त्री / प्रकाशन शाखा सूचना विभाग / उ०प्र०

27. **यूनिवर्सल हिस्ट्री ऑफ म्यूजिक /** टैगोर, एस.एम. / संजय प्रकाशन / नई दिल्ली

28. **आधुनिक तंत्रवाद्यों की जननी वीणा**/शर्मा, अनुपमा/कनिष्क पब्लिशिंग/दिल्ली/ ISBN-9788184573435

29. **भारतीय तन्त्री वाद्यों की उत्पति एवं विकास**/सेठ रेखा/कनिष्क पब्लिशिंग/दिल्ली

30. **बेला वादन शिक्षा/** देवांगन तुलसीदास

31. **भारतीय संगीत वाद्य/**मिश्र, लालमणि/भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन/नई दिल्ली/ISBN-9788126307272

32. **भारतीय तंत्री वाद्यों का ऐतिहासिक विवेचन/**गुप्ता,(डॉ)अतुल कुमार/राधा पब्लिकेशन/नई दिल्ली/ISBN–9788174878175

33. **प्राचीन भारतीय परंपरा और इतिहास/**डॉ० रांगेय राघव/ आत्माराम एंड संस/दिल्ली

34. **भारतीय संगीतज्ञ गायक, वादक एवं नर्तकों के शब्द चित्र**/काव्या' सिंह कीर्ति लावण्य/कनिष्क पब्लिशर्स नई–दिल्ली

35. **भारत के संगीतकार**/गर्ग लक्ष्मीनारायण(डॉ)/संगीत कार्यालय हाथरस

36. **हमारे संगीत–रत्न/**गर्ग लक्ष्मीनारायण(डॉ)/हाथरस संगीत कार्यालय

37. **तन्त्री वाद्य सितार एवं वादनीय बंदिशें/**गौरी (डॉ)/निर्मल पुब्लिकेशन

38. **संगीत–सरिता साहित्य/**माथुर सरिता (डॉ)/चन्द्रिका प्रकाशन

39. **संगीत विशारद/**बसंत गर्ग लक्ष्मीनारायण (डॉ)/संगीत कार्यालय/हाथरस

40. **तरबदार सितार की उत्पत्ति विकास एवं महत्व/**बांदना ठाकुर/कनिष्क पब्लिशर्स नई दिल्ली

41. **प्रतिष्ठित सितार एवं सरोद–वादकों की साधना और संघर्ष/**क्रमशर्मा शान्तनु/कनिष्क पब्लिशर्स/नई दिल्ली

42. **भारतीय इतिहास में संगीत/**शर्मा भगवत शरण/संगीत मन्दिर/खुरजा

43. **हमारे प्रिय संगीतज्ञ/**श्रीवास्तव हरीशचन्द्र (प्रो०)/संगीत सदन प्रकाशन/इलाहबाद

➢ **English**

1. **The Story Of Indian Music/**Goswami O.C/ Asia Publishing House/ Bombay] Calcutta,New Delhi, Madras

2. **The Oxford Encyclopaedia Of The Music Of India**/Ghosh Nikhil Pandit(Late)/ Sangit Mahabharti

3. **Nritta Ratnawali of Jaya Senapati**/ Rao(Dr.)Pappu Venugopala/Kaktiya Heritage Trust Telangana/ISBN-9789351049920

4. **Military History Of India**/Sarkar Jadunath/M.C Sankar & Sons/Calcutta/1960

5. **Yadav Dynasty** – Founders of Marathi Culture/Malkar Anjali/Heritage of India/Vol.-4/Issue-3

6. **Prehistoric Ancient and Hindu India**/Banerji R.D/Blackie &Sons(India)/Bombay

7. **Early India & From The Origin To AD 1300/**Thapar Romila/University of California/

ISBN-0520242254

8. **The Journal-The Asiatic Society of Bengal Vol-III**/James Prinsep/Calcutta

9. **The Struggle for Empire**/Majumdar R.C/Bombay

10. **The Early History of The Deccan Part-VII-XI**/Yazadani/Oxford University Press/New York/1960

11. **History of Nainital District**/The Imperial Gazetteer of India/1909/ vol-18

12. **History of Uttaranchal**/O.C. Handa /Indus Publishing Company/2002/ISBN-9788173871344

➢ **<u>पत्रिका</u>**

1. संगीत/अप्रैल–1954/शारंगदेव जीवनी/पृ०–3
2. संगीत/जनवरी–1958/आर्चाय शारंगदेव/पृ०–5
3. संगीत/मार्च–1960/संगीत रत्नाकर/पृ०–122
4. संगीत/मार्च–1960/संगीत के प्राचीन शास्त्र/रामकृष्ण कवि/पृ०–120
5. संगीत/अक्टूबर–1962/शारंगदेव बाले–पृथम गोष्टी/पृ०–5
6. संगीत/नवम्बर–1962/शारंगदेव बाले–पृथम गोष्टी/पृ०–5
7. संगीत/दिसम्बर–1962/शारंगदेव बाले–पृथम गोष्टी/पृ०–5

8. संगीत / फरबरी–1963 / शारंगदेव बाले–पृथम गोष्टी / पृ०–5

9. संगीत / मार्च–1963 / शारंगदेव बाले–पृथम गोष्टी / पृ०–5

10. संगीत / मार्च, 1969 / शर्मा सत्येन्द्र / उस्ताद विलायत खां / पृ०–41

11. संगीत / जून–1969 / सितार–वादक उस्ताद विलायत खां / पृ०–39

12. संगीत / जनवरी–1972 / संगीत रत्नाकर रागविवेकाध्याय और राग रागनी वर्गीकरण परम्परा / सुभद्रा चौधरी / पृ०–3

13. संगीत / मई–1972 / शारंगदेव के अलंकार / इन्द्राणी चक्रवर्ती / पृ०–3

14. संगीत / अक्टूबर–1972 / शारंगदेव और उनके टीकाकारों के मंगलाचरण आत्म–परिचायक विवरण और उपसंहार / सुभद्रा चौधरी / पृ०–3

15. संगीत / जनवरी–1975 / वाद्य वर्णन / संगीत रत्नाकर / पृ०–7

16. संगीत / सितम्बर–1992 / संगीत रत्नाकर विभिन्न संस्करणों का कालक्रमानुसार विवेचन / रमेश पटेल / पृ०–15

17. संगीत / जनवरी–2004 / वाद्य अंक

18. संगीत कला विहार / वसंतकृष्ण नूलकर / निःशंक शारंगदेव और संगीत रत्नकर / दिसम्बर–1951 / पृ०–16

➢ **<u>समाचार पत्र</u>**

1. भारतीय वाद्ये सरदार आबासाहेब मजुदार / केसरी दैनिक समाचार पत्र / दिनांक–13/01/1963

2. The Hindu/Pandit Bhajan Sopori, Saint of Santoor, Passed away/p.-1/Date-3June2022

3. State Times/Santoor Maestro Pt.Shiv Kumar Sharma dies at 83/11May 2022

****